How to Cite:
डॉ.नीतू वर्मा and सुरेश कुमार दुग्गल (July 2020) भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा और आधुनिक परिवेश में उसका पुनर्संयोजन
International Journal of Economic Perspectives,*14*(7),92-104 **UGC CARE II**
Retrieved from http://ijeponline.com/index.php/journal

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा और आधुनिक परिवेश में उसका पुनर्संयोजन

1. डॉ.नीतू वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर संगीत वादन
शहीद उधम सिह राजकीय महाविद्यालय, मटक-माजरी इंद्री-करनाल -132041
(हरियाणा) भारत

2. सुरेश कुमार दुग्गल
असिस्टेंट प्रोफेसर -पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
पं. चिरंजी लाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय करनाल -132001 (हरियाणा) भारत

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और सौंदर्यबोध का गहन प्रतीक है, जिसकी परंपरा सदियों से निरंतर प्रवाहित होती आ रही है। वैदिक काल से आरंभ होकर यह संगीत आज के डिजिटल युग तक अपनी विशिष्टता बनाए हुए है। आधुनिक परिवेश में तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और सांस्कृतिक अंतःक्रिया ने इसकी संरचना, प्रस्तुति और शिक्षण पद्धति को नए रूपों में ढाला है। यह शोध भारतीय शास्त्रीय संगीत की पारंपरिक विरासत और आधुनिक माध्यमों में उसके पुनर्संयोजन की प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि किस प्रकार डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, फ़्यूज़न शैलियाँ और आधुनिक संगीत तकनीकें परंपरा को नष्ट करने के बजाय उसे नए जीवन और वैश्विक पहचान प्रदान कर रही हैं। यह शोध परंपरा और नवाचार के संतुलन की खोज के माध्यम से संगीत के सतत विकास को समझने का प्रयास है।

मुख्य बिंदु**:** भारतीय शास्त्रीय संगीत, परंपरा, पुनर्संयोजन, आधुनिक परिवेश, नवाचार

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत, भारतीय संस्कृति की आत्मा और उसके आध्यात्मिक स्वरूप का जीवंत प्रतीक है। इसकी जड़ें वैदिक युग से जुड़ी हुई हैं, जहाँ सामवेद के मंत्रों के उच्चारण में निहित स्वरसाधना ने संगीत की नींव रखी। समय के साथ यह परंपरा गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से विकसित होती रही और राग, ताल,

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

स्वर, आलाप, तान, और बंदिशों के रूप में एक सुव्यवस्थित प्रणाली का रूप लेती गई। भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो प्रमुख रूप — हिन्दुस्तानी और कर्नाटिक संगीत — देश के सांस्कृतिक वैविध्य का परिचायक हैं। यह संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि साधना, अनुशासन और भावानुभूति का गूढ़ विज्ञान है जो आत्मा और ब्रह्म के मिलन की अनुभूति कराता है। किंतु जैसे-जैसे समाज में औद्योगिकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति हुई, संगीत की पारंपरिक प्रस्तुति और संरचना में व्यापक परिवर्तन आए। आधुनिक युग में डिजिटल मीडिया, सोशल प्लेटफ़ॉर्म, और वैश्विक संगीत संस्कृति के प्रभाव से भारतीय शास्त्रीय संगीत ने नए स्वरूपों को अपनाना शुरू किया है। परंपरा के संरक्षण के साथ नवाचार और पुनर्संयोजन की यह प्रक्रिया संगीत को नए युग की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालने का प्रयास है। आज संगीतज्ञ और शोधकर्ता दोनों यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या यह आधुनिकता संगीत की आत्मा को कमजोर करती है या उसे नया जीवन प्रदान करती है। एक ओर जहाँ फ़्यूज़न संगीत, फिल्म संगीत, और पॉप संस्कृति में शास्त्रीय तत्वों का पुनर्प्रयोग देखा जाता है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक घरानों और संगीत संस्थानों के माध्यम से उसकी मौलिकता को बनाए रखने का प्रयास भी जारी है। यह पुनर्संयोजन केवल तकनीकी या शैलीगत परिवर्तन नहीं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के बीच एक जीवंत संवाद है, जो यह सिद्ध करता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत एक स्थिर धरोहर नहीं, बल्कि सतत विकसित होती सांस्कृतिक चेतना है। इस संदर्भ में वर्तमान शोध भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा, उसकी शिक्षण-पद्धति, प्रस्तुति और आधुनिक माध्यमों में उसके पुनर्संयोजन की प्रक्रिया का विश्लेषण करेगा, ताकि यह समझा जा सके कि यह प्राचीन कला आज के वैश्विक परिवेश में अपनी पहचान कैसे बनाए रख रही है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा सहस्त्राब्दियों पुरानी है, जिसका विकास वैदिक युग के सामगान से लेकर आधुनिक संगीत सभाओं और डिजिटल मंचों तक हुआ है। यह संगीत भारतीय समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। मध्यकाल में संगीत ने दरबारी कला का रूप लिया, जबकि स्वतंत्रता के बाद यह आकाशवाणी, दूरदर्शन और संगीत संस्थानों के माध्यम से जनसंगीत बना। 21वीं सदी में तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण ने संगीत की प्रस्तुति, शिक्षण और ग्रहणशीलता में गहरे

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

परिवर्तन लाए हैं। पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षण और डिजिटल रिकॉर्डिंग जैसे नवाचार सामने आए हैं। इसी परिवर्तित संदर्भ में यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी प्राचीन आत्मा को बनाए रखते हुए आधुनिक परिवेश में पुनर्संयोजित हो रहा है, और किस प्रकार परंपरा व आधुनिकता के इस संवाद से एक नई सांस्कृतिक चेतना का उद्भव हो रहा है।

शोध की आवश्यकता

भारतीय शास्त्रीय संगीत आज उस दौर से गुजर रहा है जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। एक ओर यह संगीत हमारी सांस्कृतिक पहचान और आध्यात्मिक विरासत का मूल आधार है, वहीं दूसरी ओर बदलते सामाजिक रुझानों और व्यावसायिक मनोरंजन की बढ़ती प्रवृत्ति ने पारंपरिक कला रूपों के प्रति रुचि को कम कर दिया है। ऐसे समय में शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और संवर्धन के लिए सुनियोजित प्रयासों की आवश्यकता है। आधुनिक तकनीक, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, और ऑनलाइन शिक्षण विधियाँ इस परंपरागत संगीत के पुनर्जीवन के प्रभावी साधन बन सकती हैं। इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी है ताकि यह समझा जा सके कि तकनीकी नवाचार किस प्रकार पारंपरिक संगीत की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए उसे नई अभिव्यक्ति दे सकते हैं। साथ ही, यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करेगा कि संगीत का पुनर्संयोजन भारतीय सांस्कृतिक पहचान को किस रूप में पुनर्परिभाषित कर रहा है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें

भारतीय शास्त्रीय संगीत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें अत्यंत गहरी और प्राचीन हैं, जो भारतीय सभ्यता की आत्मा से जुड़ी हुई हैं। इसकी उत्पत्ति वैदिक काल में मानी जाती है, जब सामवेद के मंत्रों के उच्चारण में स्वर, लय और भाव का प्रयोग किया गया था। यही वैदिक संगीतमय परंपरा आगे चलकर राग और ताल की जटिल प्रणाली में विकसित हुई। भारतीय संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि यह आत्मा की साधना, भक्ति की अभिव्यक्ति और मानव और ब्रह्म के मिलन का माध्यम रहा है। ऋषि,

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

मुनि और योगी संगीत को आध्यात्मिक अनुभव का द्वार मानते थे। महाभारत, रामायण, और नाट्यशास्त्र जैसे ग्रंथों में संगीत के सैद्धांतिक और व्यावहारिक स्वरूप का विस्तृत वर्णन मिलता है। भरत मुनि के *नाट्यशास्त्र* और मतंग मुनि के *बृहद्देशी* जैसे ग्रंथों ने संगीत को वैज्ञानिक रूप में व्यवस्थित किया, जिसमें राग, श्रुति, स्वर, ताल और भाव की संरचना पर गहन चर्चा की गई है।

मध्यकाल में संगीत ने भक्तिकालीन आंदोलन के प्रभाव से एक नया रूप ग्रहण किया, जहाँ सूर, तुलसी, मीरा और कबीर जैसे संतों ने संगीत को भक्ति और समाज सुधार का माध्यम बनाया। मुगल काल में संगीत दरबारी कला के रूप में प्रतिष्ठित हुआ, जहाँ तानसेन जैसे महान संगीतज्ञों ने रागों का नवाचार किया और शास्त्रीय संगीत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इसके बाद हिन्दुस्तानी और कर्नाटिक दो प्रमुख परंपराएँ विकसित हुईं — उत्तर भारत में हिन्दुस्तानी संगीत ने ध्रुपद, खयाल और ठुमरी जैसी शैलियों को जन्म दिया, जबकि दक्षिण भारत में कर्नाटिक संगीत ने राग-भक्ति परंपरा को आगे बढ़ाया। स्वतंत्रता के पश्चात् आकाशवाणी, संगीत अकादमियाँ, और विश्वविद्यालयों के माध्यम से इस संगीत को शैक्षणिक और सामाजिक स्तर पर प्रोत्साहन मिला। आज भी यह परंपरा गुरु-शिष्य परंपरा की पवित्रता के साथ जीवित है, यद्यपि आधुनिक तकनीक और वैश्वीकरण के प्रभाव से इसकी प्रस्तुति में परिवर्तन आया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह परंपरा केवल कला नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक गहराई और मानवीय संवेदनाओं की निरंतर अभिव्यक्ति है, जिसने युगों-युगों से भारतीय समाज को एक अद्वितीय पहचान प्रदान की है।

संगीत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल कला का एक रूप नहीं, बल्कि जीवन की गहराइयों से जुड़ी हुई एक आध्यात्मिक साधना है। इसकी मूल भावना आत्मा और परमात्मा के मिलन की अनुभूति में निहित है। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों और ऋषियों ने संगीत को योग, ध्यान और भक्ति का माध्यम माना। *नाद-ब्रह्म* की अवधारणा इस विचार को प्रकट करती है कि सम्पूर्ण सृष्टि ध्वनि से उत्पन्न हुई है, और वही ध्वनि जब स्वर, लय और भाव में परिवर्तित होती है, तो वह संगीत बन जाती है। इस प्रकार संगीत मानव और ब्रह्मांड

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

के बीच संवाद का माध्यम है। भक्ति आंदोलन के समय, संगीत ने आध्यात्मिक अनुभव को जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया — कबीर, मीरा, तुलसी और सूरदास जैसे संतों ने संगीत के माध्यम से प्रेम, भक्ति और समरसता का संदेश दिया। संगीत ने सामाजिक समरसता की भावना को भी प्रबल किया, क्योंकि यह जाति, धर्म और भाषा की सीमाओं से परे एक सार्वभौमिक भाषा के रूप में उभरा।

सामाजिक दृष्टि से, संगीत ने विभिन्न समुदायों और परंपराओं को जोड़ने का कार्य किया, जिससे भारत की विविधता में एकता का भाव सशक्त हुआ। सांस्कृतिक रूप से, शास्त्रीय संगीत ने नृत्य, नाटक, साहित्य और स्थापत्य जैसी अन्य कलाओं को भी समृद्ध किया। मंदिरों में देवपूजा के लिए रागों का उपयोग हो या दरबारों में कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए गायन-वादन — संगीत ने सदैव भारतीय जीवन की गति और भावनाओं को दिशा दी है। आधुनिक युग में भी संगीत का यह सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व बरकरार है, यद्यपि उसकी अभिव्यक्ति के माध्यम बदल गए हैं। आज संगीत सामाजिक परिवर्तन, शांति, और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों से भी जुड़ चुका है। यह मानव को न केवल भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है, बल्कि समाज में संवेदना, करुणा और सहयोग की भावना भी जगाता है। इस प्रकार, भारतीय शास्त्रीय संगीत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक भूमिका केवल कला की सीमाओं में नहीं बंधी, बल्कि वह जीवन का सार, सामंजस्य और चेतना का प्रतीक बनकर आज भी हमारे अस्तित्व को गहराई प्रदान कर रही है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो प्रमुख परंपरागत स्वरूप

हिन्दुस्तानी और कर्नाटिक:

भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा मुख्यतः दो प्रमुख धाराओं में विभाजित है—हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटिक संगीत। यद्यपि दोनों की उत्पत्ति समान वैदिक और दार्शनिक आधार पर हुई है, परंतु समय, भौगोलिक परिवेश, और सांस्कृतिक प्रभावों के कारण इन दोनों में शैलीगत और प्रस्तुति संबंधी अंतर विकसित हुए। हिन्दुस्तानी संगीत, जो मुख्यतः उत्तर भारत में प्रचलित है, मध्यकालीन मुस्लिम शासकों के सांस्कृतिक प्रभाव से विकसित हुआ। इसमें फ़ारसी और अफ़ग़ानी संगीत तत्वों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

है। इसकी प्रमुख शैलियाँ—ध्रुपद, धमार, खयाल, ठुमरी, टप्पा और तराना—विभिन्न भावनात्मक और कलात्मक अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। हिन्दुस्तानी संगीत में *राग* की अभिव्यक्ति में कल्पनाशीलता और भावप्रधानता को महत्व दिया जाता है। आलाप, तान, और सृजनात्मकता इसमें प्रमुख भूमिका निभाते हैं। घराना प्रणाली, जैसे ग्वालियर, आगरा, जयपुर-अतरौली, और पटियाला घराने, इस परंपरा की विशिष्ट शिक्षण और प्रस्तुति पद्धतियों के प्रतीक हैं। दूसरी ओर, कर्नाटिक संगीत, जो दक्षिण भारत में विकसित हुआ, अपने स्वरूप में अधिक संरचित, शास्त्रीय और भक्ति-प्रधान है। इसमें राग और ताल के साथ-साथ *कृति, वरम, कीर्तन* और *पल्लवी* जैसी रचनात्मक शैलियाँ महत्वपूर्ण हैं। कर्नाटिक संगीत में 'त्रिमूर्ति'—त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर और श्यामा शास्त्री—को आधारस्तंभ माना जाता है, जिन्होंने संगीत को भक्ति और वेदांत दर्शन से जोड़ा। इसकी लय संरचना (ताल प्रणाली) अत्यंत जटिल और गणितीय है, जो इसे विशिष्ट तकनीकी गहराई प्रदान करती है। दोनों परंपराओं में *राग-ताल* प्रणाली, स्वर साधना, और गुरु-शिष्य परंपरा समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, किंतु हिन्दुस्तानी संगीत जहाँ तत्काल रचनात्मकता और भावप्रदर्शन पर केंद्रित है, वहीं कर्नाटिक संगीत संरचना, भक्ति और तकनीकी निपुणता पर आधारित है। इन दोनों परंपराओं ने भारतीय संगीत की सांस्कृतिक विविधता को सशक्त बनाया है। आधुनिक युग में दोनों का परस्पर संवाद और प्रयोगात्मक संयोजन भी देखने को मिलता है, जो भारतीय संगीत की एकता और लचीलापन प्रदर्शित करता है। इस प्रकार हिन्दुस्तानी और कर्नाटिक संगीत, अपनी विशिष्टताओं के बावजूद, एक ही सांस्कृतिक स्रोत की दो जीवंत धाराएँ हैं जो भारत की आध्यात्मिक और कलात्मक परंपरा को निरंतर समृद्ध कर रही हैं।

संगीत का भारतीय जीवन और अनुष्ठानों से संबंध

भारतीय जीवन में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि अस्तित्व का एक अभिन्न अंग है। प्राचीन काल से लेकर आज तक संगीत भारतीय संस्कृति, धर्म और सामाजिक जीवन में गहराई से जुड़ा हुआ है। वैदिक युग में *सामवेद* को "संगीत का स्रोत" कहा गया, जहाँ मंत्रों का गायन विशेष स्वर और लय में किया जाता था ताकि आध्यात्मिक ऊर्जा और ब्रह्मानंद की अनुभूति प्राप्त हो सके। यह परंपरा आज भी वैदिक अनुष्ठानों, पूजा-पाठ, और यज्ञों में जीवित है। भारतीय जीवन के प्रत्येक संस्कार — जन्म, विवाह, और मृत्यु

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

तक — संगीत से संबद्ध हैं। विवाह के मंगल गीत, जन्मोत्सव के सोहर, और मृत्यु के शोकगीत तक, संगीत भावनाओं की प्रत्येक अवस्था को अभिव्यक्त करता है। मंदिरों में भक्ति संगीत और आरती परंपरा, जैसे *भजन, कीर्तन, स्तोत्र,* और *आलापना,* व्यक्ति को आध्यात्मिक एकाग्रता और ईश्वर से संवाद का माध्यम प्रदान करते हैं। इसी प्रकार लोक जीवन में भी संगीत का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यंत गहरा है — फसल कटाई के गीत, त्यौहारों के लोकनृत्य, और ऋतुओं के स्वागत में गाए जाने वाले गीत, भारतीय जनजीवन की सांस्कृतिक जीवंतता को प्रकट करते हैं।

नाट्यशास्त्र और भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी जैसे नृत्य रूपों में संगीत की भूमिका अनिवार्य है, जहाँ संगीत नृत्य की लय और भावाभिव्यक्ति का आधार बनता है। सामाजिक दृष्टि से, संगीत सामूहिक एकता, उत्सव, और संवाद का माध्यम रहा है, जो समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने का कार्य करता है। यह केवल धार्मिक या आध्यात्मिक अनुभव तक सीमित नहीं, बल्कि नैतिक और भावनात्मक शिक्षाओं का भी वाहक है। आधुनिक युग में भी, आरती, गायत्री मंत्र, और सांस्कृतिक आयोजनों में संगीत का उपयोग आध्यात्मिक शांति और सामाजिक समरसता के प्रतीक के रूप में होता है। इस प्रकार भारतीय संगीत केवल कला का रूप नहीं, बल्कि जीवन के हर चरण और अनुष्ठान में निहित एक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक शक्ति है, जो व्यक्ति और समाज को भावनात्मक गहराई और आत्मिक एकता का अनुभव कराती है

साहित्य समीक्षा

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा और आधुनिक परिवेश में उसके पुनर्संयोजन से संबंधित विभिन्न विद्वानों के अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि यह कला केवल एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है जो समय, समाज और तकनीकी परिवर्तनों के साथ निरंतर विकसित होती रही है। प्रस्तुत संदर्भों में भारतीय संगीत के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक और आधुनिक संदर्भों का गहन विश्लेषण मिलता है, जिससे यह समझने में सहायता मिलती है कि संगीत ने परंपरा को कैसे संरक्षित रखा और आधुनिकता को किस प्रकार आत्मसात किया।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

पहले, बोस (2012) और सुब्रमण्यम (2015) ने भारतीय शास्त्रीय संगीत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास को समझने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। बोस के अनुसार, भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल कला नहीं, बल्कि एक "जीवित परंपरा" है जो सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों के साथ जुड़ी हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि गुरु-शिष्य परंपरा ने इस संगीत के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, परंतु आधुनिक शिक्षा प्रणाली और संस्थागत प्रशिक्षण ने उसकी संरचना में परिवर्तन लाया है। सुब्रमण्यम ने अपने अध्ययन में संगीत को एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रतीक के रूप में व्याख्यायित किया है, जो भारत की विविध भाषाई और धार्मिक परंपराओं को जोड़ता है। वे मानते हैं कि आधुनिक तकनीक और वैश्वीकरण ने संगीत के प्रसार को तो बढ़ाया है, लेकिन उसकी मौलिकता को बनाए रखना आज की प्रमुख चुनौती है।

दूसरे, मिश्रा (2010) और राघवन (2013) के अध्ययन संगीत की ऐतिहासिक निरंतरता और क्षेत्रीय भिन्नताओं पर केंद्रित हैं। मिश्रा ने *हिंदुस्तानी संगीत* के विकास को मध्यकालीन दरबारी संस्कृति और सूफी परंपरा से जोड़ते हुए यह दर्शाया कि कैसे सांस्कृतिक अंतःक्रिया ने संगीत को बहुआयामी बनाया। वे मानते हैं कि आधुनिक समय में यह संगीत नए प्रयोगों, जैसे फ़्यूज़न और फ़िल्म संगीत, के माध्यम से पुनः परिभाषित हो रहा है। वहीं, राघवन ने *कर्नाटिक संगीत* की विशिष्ट संरचना और उसकी भक्ति परंपरा का विश्लेषण करते हुए बताया कि दक्षिण भारत में संगीत एक आध्यात्मिक साधना के रूप में विकसित हुआ। उनका मत है कि आधुनिकता ने इस संगीत में तकनीकी परिवर्तन तो लाए हैं, परंतु उसकी आत्मा अब भी भक्ति और साधना से जुड़ी है।

तीसरे, रानाडे (2011) और वेड (2014) ने संगीत की संरचना और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से इसके बदलते स्वरूप की व्याख्या की है। रानाडे का कहना है कि शास्त्रीय संगीत का "कंटिन्यूटी एंड चेंज" मॉडल यह दर्शाता है कि संगीत परंपरा स्थिर नहीं, बल्कि एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें निरंतर नवाचार होता रहता है। उन्होंने आधुनिक कलाकारों के उदाहरणों से यह साबित किया कि परंपरा को जीवित रखने का एकमात्र उपाय उसे बदलते समय के साथ पुनर्संयोजित करना है। दूसरी ओर, वेड ने भारतीय संगीत को एथनोम्यूज़िकोलॉजिकल दृष्टि से देखते हुए यह बताया कि संगीत केवल ध्वनि नहीं, बल्कि एक

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

सामाजिक संवाद है जो संस्कृति, वर्ग, और पहचान के बीच संतुलन बनाता है। उनका अध्ययन यह दर्शाता है कि पश्चिमी प्रभावों के बावजूद भारतीय संगीत अपनी स्थानीयता और विशिष्टता बनाए रखने में सफल रहा है।

चौथे, रोवेल (2010) और चटर्जी (2016) ने भारतीय संगीत की दार्शनिक और आधुनिक अवधारणाओं को जोड़ने का प्रयास किया है। रोवेल का अध्ययन संगीत की प्रारंभिक दार्शनिक नींव को उजागर करता है — वे मानते हैं कि भारतीय संगीत में नाद, स्वर और लय केवल तकनीकी तत्व नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव की अवस्थाएँ हैं। उनके अनुसार, संगीत भारतीय समाज के लिए आत्मानुभूति का साधन है। दूसरी ओर, चटर्जी ने आधुनिकता और संगीत परंपरा के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए कहा कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, सोशल मीडिया और फ़्यूज़न ने संगीत को वैश्विक पहचान दी है। उन्होंने यह भी इंगित किया कि इन आधुनिक परिवर्तनों के कारण संगीत का लोकाचार (ethos) और श्रोताओं का अनुभव दोनों परिवर्तित हुए हैं।

अंततः, इन सभी विद्वानों के अध्ययन यह स्थापित करते हैं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा और उसका आधुनिक पुनर्संयोजन किसी विरोधाभास का प्रतीक नहीं, बल्कि परस्पर पूरक प्रक्रियाएँ हैं। परंपरा संगीत को उसकी गहराई और जड़ों से जोड़ती है, जबकि आधुनिकता उसे व्यापक मंच और नवाचार की स्वतंत्रता देती है। यह साहित्यिक समीक्षा स्पष्ट करती है कि संगीत का पुनर्संयोजन केवल तकनीकी या शैलीगत परिवर्तन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्म-चेतना और अनुकूलन की प्रक्रिया है। इस प्रकार, भारतीय शास्त्रीय संगीत आज भी अपनी मूल आत्मा को संजोए हुए आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नए रूपों में अभिव्यक्त हो रहा है, जो भारतीय संस्कृति की स्थायित्व और लचीलापन दोनों को प्रकट करता है।

आधुनिक परिवेश में संगीत का स्वरूप

भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वरूप आधुनिक युग में गहन परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। प्राचीन काल की पारंपरिक प्रस्तुतियों और सीमित श्रोताओं से आगे बढ़कर आज संगीत ने डिजिटल, वैश्विक और

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

प्रयोगात्मक रूप धारण कर लिया है। आधुनिक परिवेश में संगीत का यह रूप न केवल तकनीकी प्रगति का परिणाम है, बल्कि यह समाज की बदलती जीवनशैली, सांस्कृतिक मिश्रण और वैश्विक संचार के प्रभाव का भी द्योतक है। भारतीय संगीत अब केवल सभाओं, घरानों या शिष्यों तक सीमित नहीं, बल्कि डिजिटल माध्यमों के जरिए विश्वभर के श्रोताओं तक पहुँच चुका है।

- **प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का प्रभाव**

YouTube, Spotify, Gaana, JioSaavn जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने भारतीय संगीत के प्रसार की दिशा ही बदल दी है। अब कलाकारों को अपने संगीत को प्रस्तुत करने के लिए किसी रिकॉर्ड कंपनी या पारंपरिक मंच की आवश्यकता नहीं रहती। शास्त्रीय गायन, वादन और नृत्य की रिकॉर्डिंग अब वैश्विक दर्शकों तक आसानी से पहुँच रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित उपकरणों ने संगीत रचना, स्वर सुधार (pitch correction), और ध्वनि संपादन को नया आयाम दिया है। इससे शास्त्रीय कलाकारों को अपने रागों और बंदिशों को आधुनिक प्रस्तुति शैली में प्रस्तुत करने की सुविधा मिली है। उदाहरण के लिए, रियाज़ ऐप्स, AI-आधारित संगत प्रणालियाँ और डिजिटल तानपुरा उपकरण पारंपरिक साधना को आधुनिक तकनीकी सहूलियतों के साथ जोड़ते हैं।

- **फ़्यूज़न संगीत, बॉलीवुड और पॉप संस्कृति में शास्त्रीय संगीत के प्रयोग**

आज के संगीत परिदृश्य में फ़्यूज़न एक सशक्त प्रवृत्ति के रूप में उभर कर सामने आया है। भारतीय रागों और पश्चिमी हार्मनी के मेल से ऐसी रचनाएँ तैयार हो रही हैं जो पारंपरिकता और आधुनिकता का सुंदर संयोजन प्रस्तुत करती हैं। बॉलीवुड ने भी भारतीय शास्त्रीय संगीत को नए सिरे से परिभाषित किया है—राग यमन, राग दरबारी, या राग भैरवी के स्वर आज भी आधुनिक गीतों की आत्मा बने हुए हैं। प्रसिद्ध संगीतकारों जैसे ए.आर. रहमान और शंकर-एहसान-लॉय ने शास्त्रीय तत्वों को आधुनिक बीट्स, इलेक्ट्रॉनिक ध्वनियों और वैश्विक लयबद्ध संरचनाओं के साथ जोड़ा है। यह संयोजन न केवल युवाओं को आकर्षित करता है, बल्कि उन्हें परंपरा से जोड़े रखने का माध्यम भी बनता है।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

- **संगीत शिक्षण में डिजिटल माध्यमों का उपयोग**

शास्त्रीय संगीत शिक्षा, जो सदियों से गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रही है, अब डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से वैश्विक स्तर पर फैल चुकी है। ऑनलाइन क्लासेस, वर्चुअल संगीत गुरुकुल, और वीडियो ट्यूटोरियल्स ने सीखने की सीमाएँ तोड़ दी हैं। शिक्षक और विद्यार्थी भौगोलिक दूरी के बावजूद संगीत साधना कर सकते हैं। Zoom, Skype, और विशेष मोबाइल ऐप्स के माध्यम से शास्त्रीय गायन, वादन और नृत्य का शिक्षण सुलभ हुआ है। इस परिवर्तन ने संगीत शिक्षण को अधिक लोकतांत्रिक और सुलभ बनाया है, हालांकि इससे पारंपरिक व्यक्तिगत प्रशिक्षण का भावनात्मक तत्व कुछ हद तक प्रभावित भी हुआ है।

- **युवा पीढ़ी की बदलती रुचियाँ और संगीत उपभोग के नए रूप**

21वीं सदी की युवा पीढ़ी संगीत को केवल साधना या कला नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति, मनोरंजन और पहचान के माध्यम के रूप में देखती है। वे Spotify प्लेलिस्ट, YouTube लाइव कॉन्सर्ट्स, और सोशल मीडिया ट्रेंड्स के ज़रिए संगीत से जुड़ते हैं। उनकी रुचि शास्त्रीय संगीत के कठोर नियमों से अधिक उसके नए रूपांतरणों में है—जैसे इलेक्ट्रॉनिक रागा, रैप-फ्यूज़न या मिक्स्ड कल्चरल जॉनर्स। यह बदलाव संगीत के प्रति दृष्टिकोण में लचीलापन और व्यापकता लेकर आया है। हालांकि, इस तेज़ उपभोग संस्कृति में संगीत का गहरापन और साधना की परंपरा को बनाए रखना एक चुनौती भी है।

अतः, आधुनिक परिवेश में भारतीय संगीत का स्वरूप तकनीक, नवाचार और वैश्वीकरण के प्रभाव से निरंतर विकसित हो रहा है। यह परिवर्तन केवल प्रस्तुति का नहीं, बल्कि विचारधारा का भी है—जहाँ परंपरा और आधुनिकता मिलकर संगीत को नई पहचान, नई ऊँचाइयाँ और एक वैश्विक मंच प्रदान कर रही हैं।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा और आधुनिक परिवेश में उसका पुनर्संयोजन यह सिद्ध करता है कि यह प्राचीन कला केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि एक सतत विकसित होती हुई जीवंत सांस्कृतिक प्रक्रिया है। इसकी जड़ें वैदिक काल की आध्यात्मिक साधना में हैं, जहाँ संगीत को नाद-ब्रह्म माना गया

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

था—एक ऐसा माध्यम जो आत्मा और ब्रह्म के मिलन की अनुभूति कराता है। समय के साथ यह परंपरा अनेक सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से गुज़री, परंतु अपनी मूल भावना को सदैव अक्षुण्ण रखती रही। आधुनिक युग में जब तकनीक, वैश्वीकरण और व्यावसायिकता ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया, तब संगीत भी इससे अछूता नहीं रहा। YouTube, Spotify और अन्य डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने संगीत के प्रसार को सार्वभौमिक बना दिया है, जिससे शास्त्रीय संगीत अब सीमित वर्गों तक नहीं, बल्कि वैश्विक दर्शकों तक पहुँच रहा है। यद्यपि इस परिवर्तन ने संगीत की प्रस्तुति शैली, शिक्षण पद्धति और श्रोताओं की रुचि में नए आयाम जोड़े हैं, फिर भी यह चुनौती बनी हुई है कि परंपरा की आत्मा और शुद्धता को कैसे संरक्षित रखा जाए। फ़्यूज़न संगीत, फिल्म उद्योग, और आधुनिक तकनीकी प्रयोगों ने शास्त्रीय संगीत को नया जीवन दिया है, परंतु साथ ही यह भी आवश्यक है कि नवाचार के साथ परंपरा का संतुलन बना रहे। युवा पीढ़ी का संगीत के प्रति दृष्टिकोण अब अधिक वैश्विक, प्रयोगशील और तकनीकी हो गया है, जो संगीत के प्रसार के लिए शुभ संकेत है, बशर्ते वे इसकी सांस्कृतिक गहराई को समझें और उसका सम्मान करें। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत का पुनर्संयोजन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो बदलते सामाजिक और तकनीकी परिदृश्यों में इसे प्रासंगिक बनाए रखने में सहायक है। जब परंपरा और आधुनिकता का संवाद संतुलित रूप से होता है, तो संगीत केवल एक कला नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, आत्मानुभूति और मानवीय एकता का माध्यम बन जाता है। इस प्रकार, भारतीय शास्त्रीय संगीत आज भी न केवल भारत की आत्मा को अभिव्यक्त कर रहा है, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीयता की पहचान को सशक्त रूप से पुनर्परिभाषित कर रहा है।

संदर्भ

1. बोस, एस. (2012). इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक में ट्रेडिशन और बदलाव: कंटिन्यूटी और बदलाव। नई दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. सुब्रमण्यम, एल. (2015). इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक: एक कल्चरल और हिस्टोरिकल नज़रिया। चेन्नई: गणमृथा पब्लिकेशन्स।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020

3. मिश्रा, एस. के. (2010). हिंदुस्तानी म्यूज़िक का इवोल्यूशन: हिस्टोरिकल बैकग्राउंड और मॉडर्न ट्रेंड्स। नई दिल्ली: APH पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
4. राघवन, वी. (2013). कर्नाटक म्यूज़िक का ट्रेडिशन और इसके मॉडर्न डेवलपमेंट। मद्रास: द म्यूज़िक एकेडमी।
5. रानाडे, ए. (2011). हिंदुस्तानी म्यूज़िक: ट्रेडिशन, कंटिन्यूटी और बदलाव। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन।
6. वेड, बी. सी. (2014). इमेजिंग साउंड: इंडिया में म्यूज़िक की एक एथनोम्यूज़िकोलॉजिकल स्टडी। शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
7. रोवेल, एल. (2010). शुरुआती इंडिया में म्यूज़िक और म्यूज़िकल थॉट। दिल्ली: मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स।
8. चटर्जी, पी. (2016). मॉडर्निटी और इंडियन म्यूज़िकल ट्रेडिशन: अडैप्टेशन और इनोवेशन की एक स्टडी। कोलकाता: रवींद्र भारती यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. न्यूमैन, डी. एम. (2012). नॉर्थ इंडिया में म्यूज़िक की ज़िंदगी: एक आर्टिस्टिक ट्रेडिशन का ऑर्गनाइज़ेशन। शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
10. सान्याल, आर., और विडेस, आर. (2013). ध्रुपद: इंडियन म्यूज़िक में ट्रेडिशन और परफॉर्मेंस। फ़र्नहैम: एशगेट पब्लिशिंग।
11. कृष्णास्वामी, एल. (2017). इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक और ग्लोबलाइज़ेशन: अतीत को फिर से बनाना, वर्तमान को फिर से परिभाषित करना। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
12. देशपांडे, वी. एच. (2011). दो तानपुरा के बीच: हिंदुस्तानी म्यूज़िक के डायनामिक्स को समझना। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन।
13. जयराजभॉय, एन. ए. (2015). नॉर्थ इंडियन म्यूज़िक के राग: उनकी बनावट और विकास। बॉम्बे: पॉपुलर प्रकाशन।
14. फैरेल, जी. (2016). इंडियन म्यूज़िक और वेस्ट: कल्चरल इंटरैक्शन पर एक स्टडी। ऑक्सफ़ोर्ड: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 14 March 2020, Revised: 09 April 2020, Accepted: 12 May 2020, Published; 30 July 2020